वाराणसी जिले के हथकरघा बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन

चाँदनी सिंह,
शोधार्थी, समाज कार्य विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान,
लाडनूं, राजस्थान

डॉ० बिजेन्द्र प्रधान,
सह–आचार्य,समाज कार्य विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान,
लाडनूं, राजस्थान

सारांश

भारत का हथकरघा उद्योग राष्ट्रीय स्तर पर ही नही अपितु अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर भी विश्वविख्यात है। भारत का हथकरघा उद्योग हथकरघा निर्मित वस्त्रों के विकास डिजाइनों एवं कपड़ों और परिधानों के निर्माण की उपलब्धता के कारण बहुत ही लोकप्रिय हो गया है। जो भारत में हथकरघा क्षेत्र में कार्यरत लाखों बुनकरों की प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से आजीविका उपलब्ध कराता है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में लगभग 47,213 हथकरघा बुनकर हैं। अतः इस अध्ययन में वाराणसी जिले के हथकरघा बुनकरों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों को प्रस्तुत किया गया हैं। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से 120 उत्तरदाताओं से आँकड़ो का संग्रह किया गया है। आयु, लिंग, शैक्षणिक योग्यता, पारिवारिक स्वरूप, राशन कार्ड, मासिक आय आदि के आधार पर सरल बार आरेख का उपयोग करके विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

भोजन व आश्रय की तरह वस्त्र भी मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। 19वीं शताब्दी तक जन वस्त्र निर्माण के लिए कोई मशीने उपलब्ध नही थी तब हथकरघा उद्योग पूरे विश्व में कपड़ों की जरूरत पूरा करने के लिए एकमात्र साधन था। भारत में हथकरघा उद्योग अत्यन्त ही प्राचीन एवं परम्परागत उद्योग है। हथकरघा वस्त्र तथा हथकरघा बुनकर भारत की समृद्धि, संस्कृति, विरासत एवं परम्परा का एक अभिन्न अंग है। यह एक ऐसी धरोहर है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। इसमे न केवल देश की समृद्धि, उन्नति एवं विविधता के दर्शन होते है अपितु यह देश के बुनकरो की अद्वितीय कलात्मकता की मिशाल है। हथकरघा उद्योग देश की सांस्कृति विरासत का न केवल प्रतीक है अपितु यह उद्योग देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीय हथकरघा जनगणना (2009–2010) के अनुसार, वर्तमान में लगभग 43.31 लाख लोग हथकरघा क्रियाकलापों (बुनाई व इससे सम्बद्ध गतिविधिओं) से जुड़े हुए है तथा अपने जीवकोपार्जन के लिए इस उद्योग पर निर्भर है। कृषि के बाद यह उद्योग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक रूप से आर्थिक रूप से कमजोर व वंचित बुनकरों के तेजी से बढ़ते अनुभाग के लिए पूर्णकालिक एवं अंशकालिक दोनो प्रकार के रोजगार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राचीन समय से ही इस उद्योग का सामाजिक एवं आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में उद्योग का कुल वस्त्र उत्पादन में योगदान लगभग 15 प्रतिशत है तथा यह उद्योग देश के निर्यात आय में भी योगदान करता

है। विश्व में हाथ से बने हुए कपड़ों का 95 प्रतिशत भाग केवल भारत से ही प्राप्त होता है।

फिर भी यह उद्योग विभिन्न समस्याओं जैसें पावरलूम मिल क्षेत्र से प्रतिस्पर्द्धा, कच्चे माल की अनियमितता तथा अपर्याप्त आपूर्ति, वित्त की समस्या इत्यादि अनेक समस्याओं से जूझ रहा है।

साहित्य का पुनरावलोकन

1. **तनुश्री (2015)** ने अपने अध्ययन में पाया कि वाराणसी के हथकरघा बुनकरों ने अपना प्रतिष्ठित पारम्परिक उद्योग खो दिया है तथा यह पूरे भारत में केवल औद्योगिकीकरण के कारण घटित हुआ है। पूंजीवादी उत्पादन, पावरलूम का हस्तक्षेप, कच्चे माल की बढ़ती कीमत, कम मजदूरी एवं श्रम की समस्या ने हथकरघा उद्योग को बंद करने की तरफ धकेल दिया है। इसके अतिरिक्त उत्पादन प्रणाली ज्यादातर एक विशेष उद्यमी वर्ग गद्दीदार या मास्टर बुनकर के ही नियंत्रण में है।
2. **डोडमनी, डॉ० श्रीनिवास (2015)** ने अपने अध्ययन में बताया कि यादमीर जिले के हथकरघा बुनकरां, जिसको यह व्यवसाय विरासत के रूप में मिला है उनकी स्थिति अत्यन्त ही दयनीय है। इनमें से अधिकतर बुनकर श्रमिक बुनकर है जो दिन में 10 घंटे से ज्यादा काम करने के बावजूद न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करते है।
3. **अनकम, श्रीनिवास व नीममाला राजेश (2016)** ने अपने अध्ययन मे पाया कि अधिकतर बुनकरों की आय 2000–4000 रू० मासिक है। अधिकतर बुनकरों का यह व्यवसाय परम्परागत है तथा बुनकर अशिक्षित भी है। इस हेतु सुझाव दिया कि विभिन्न सरकारी उपायो जैसे विपणन सुविधाओं तथा कताई मिलों को प्रत्येक जिले में स्थापित करके तथा विभिन्न योजनाओं के प्रति बुनकरों में जागरूकता लाके हथकरघा उद्योग का विकास किया जा सकता है।
4. **सदानन्दन, डॉ० बी० (2016)** के द्वारा किये गये अध्ययन में ज्ञात हुआ कि बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अच्छी नही है क्योकि बुनकर अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ 8 घंटे से अधिक समय तक कार्य करते है। इसके अतिरिक्त वित्तीय बाधांए, कम पारिश्रमिक, खराब कार्यदशाएं और अपर्याप्त सरकारी सहायता के कारण बुनकर विभिन्न चुनौतियों का सामना लगातार कर रहे है।
5. **रॉव, श्रीनिवास व डॉ० एन श्रीध्र (2017)** ने अपने अध्ययन में बताया कि इस उद्योग के संकट का कारण इस उद्योग का परम्परागत होना है। इसके साथ ही सहकारी समीतियों का निराशाजनक प्रदर्शन निष्पादन व बुनकरों की कमजोर आर्थिक स्थिति इस संकट का एक और मुख्य कारण है। इस उद्योग में संलग्न बुनकरों की आय बहुत कम है तथा गरीबी की व्यापकता है।

अध्ययन का उद्देष्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न है :

1. हथकरघा बुनकरों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. हथकरघा बुनकरों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति मे सुधार हेतु सुझाव देना।

शेध विधि

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में किया गया है जो कि हथकरघा का एक बड़ा केन्द्र है। प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी जिले के मुख्यतः दो ब्लाक काशी विद्यापीठ ब्लाक व चिरईगाँव ब्लाक मे किया गया है।

निदर्षन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में हथकरघा बुनकरों के सामाजिक आर्थिक स्थिति के अध्ययन हेतु उद्येश्य पूर्ण निदर्शन विधि का उपयोग किया गया हैं।

आँकड़ो का संग्रह

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची व प्रत्यक्ष वैयक्तिक साक्षात्कार विधि के द्वारा 120 उत्तरदाताओं से प्राथमिक आँकड़ो का संग्रह किया गया है।

द्वितीय आँकड़े वे आँकड़े है जो किताबों, पत्र– पत्रिकाओं, कुछ संस्थाओं व इण्टरनेट इत्यादि के द्वारा संग्रहित किये जाते है।

प्राथमिक आँकड़े

प्राथमिक आँकड़े स्वतंत्र बुनकरों या सहकारी संस्थाओं के अन्तर्गत कार्य करने वाले 120 बुनकरों से एकत्रित किये गये है। आँकड़ो को एकत्रित करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। जो कि बहुविकल्पीय एवं सामान्य प्रश्नों का उपयोग करने हेतु बनायी गयी है। प्राथमिक आँकड़ों के संग्रह हेतु अवलोकन विधि व वैयक्तिक साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक आँकड़े

द्वितीयक आँकड़ो के स्रोत जैसे विभिन्न प्रकाशित व अप्रकाशित प्रतिवेदन, किताबे पत्र–पत्रिकाएं इत्यादि है जिनका उपयोग इस अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों के संग्रह हेतु किया गया है।

आँकड़ो का विष्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ो को संग्रह साक्षात्कार अनुसूची व प्रत्यक्ष वैयक्तिक साक्षात्कार विधि के प्रयोग द्वारा किया गया है। इस अध्ययन के आँकड़ो का विश्लेषण प्रतिशत विधि के आधार पर किया गया है।

सारणी संख्या – 1
उत्तरदाताओं के आयु के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	आयु (वर्षों में)	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	15–25 वर्ष	35	29.00
2.	26–35 वर्ष	26	22.00
3.	36–45 वर्ष	29	24.00
4.	46–55 वर्ष या अधिक	30	25.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 1 के प्राप्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि हथकरघा बुनकरी का कार्य करने वाले लोगों में 29.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 15–25 वर्ष है। 22.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 26–35 वर्ष के बीच है। 25.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 46–55 वर्ष या अधिक के अन्तर्गत है तथा 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 36–45 वर्ष के अन्तर्गत है।

सारणी संख्या – 2
उत्तरदाताओं के लिंग के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	थ्लंग	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	महिला	29	24.00
2.	पुरुष	91	76.00
3.	ट्रांसजेन्डर	00	00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 2 के प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 76.00 प्रतिशत उत्तरदाता पुरुष है जबकि 24.00 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है।

सारणी संख्या – 3
उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	विवाहित	98	81.00
2.	अविवाहित	13	11.00
3.	विधवा/विधुर	7	6.00
4.	तलाकशुदा	2	2.00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 3 के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन में 81.00 प्रतिशत उत्तरादाता विवाहित है। 11.00 प्रतिशत उत्तरादाता अविवाहित, 6.00 प्रतिशत उत्तरादाता विधवा/विधुर है तथा 2.00 प्रतिशत उत्तरादाताओं का तलाक हो चुका है।

सारणी संख्या – 4

उत्तरदाताओं के पारिवारिक स्वरुप के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	पारिवारिक स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	संयुक्त परिवार	70	58.00
2.	एकाकी परिवार	50	42.00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 4 के प्राप्त विवरण से ज्ञात होता है कि 58.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पारिवारिक स्वरुप संयुक्त परिवार है जबकि 42.00 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार के है।

सारणी संख्या – 5

उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्थिति का वर्गीकरण

क्र0सं0	शैक्षणिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	अशिक्षित	42	35.00
2.	प्राइमरी	40	33.00
3.	माध्यमिक	24	20.00
4.	हाईस्कूल	7	7.00
5.	इण्टर	7	6.00
6.	स्नातक	00	0.00
7.	परास्नातक	00	0.00
8.	अन्य	00	0.00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 5 में अगर उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण करें तो हम पाते है कि अध्ययन के अन्तर्गत आने वाले 35.00 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित है। 33.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्राईमरी स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की है। 20.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यतिक स्तर तक पढ़े है। 7.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाईस्कूल तक की शिक्षा ली है जबकि केवल 6. 00 प्रतिशत उत्तरदाताओं में इण्टर किया है।

सारणी संख्या – 6

आवास के स्वरुप के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	आवास का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	कच्चा	38	32.00
2.	पक्का	39	33.00
3.	अर्द्ध पक्का	43	35.00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 6 से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह ज्ञात होता है कि 35.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मकान अर्द्ध पक्का है। 33.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मकान पक्का है जबकि 32.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मकान अभी भी कच्चा है।

सारणी संख्या – 7

राषन कार्ड के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	राषन कार्ड का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	बी०पी०एल० कार्ड	65	54.00
2.	ए०पी०एल० कार्ड	12	10.00
3.	अन्त्योदय कार्ड	20	17.00
4.	कोई नहीं	23	19.00
योग		120.00	100

सारणी संख्या 7 के अनुसार 54.00 प्रतिशत उत्तरदाता बी०पी०एल० कार्ड धारक है। 19.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि उनके पास किसी भी प्रकार का राशन कार्ड नहीं है। 17.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्त्योदय कार्ड की श्रेणी में आते है जबकि 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास ए०पी०एल० कार्ड धारक है।

सारणी संख्या – 8

व्यवसायिक बीमारी के स्वरुप के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	परिवार के सदस्य को व्यवसायिक बीमारी	आवृति	प्रतिषत (%)
1.	हां	70.00	70
2.	नहीं	30.00	30

योग	**120.00**	**100**

सारणी संख्या 8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 70.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का कोई न कोई सदस्य व्यवसायिक बीमारी से ग्रसित है जबकि 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में किसी सदस्य व्यवसायिक बीमारी का शिकार नहीं है।

सारणी संख्या – 9

व्यवसाय के स्वरुप के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	व्यवसाय का स्वरुप	आवृति	प्रतिषत (%)
1.	पूर्णकालिक	73	61.00
2.	अंशकालिक	47	39.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 9 से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 61.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के व्यवसाय का स्वरुप पूर्णकालिक है जबकि 39.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के व्यवसाय का स्वरुप अंशकालिक है।

सारणी संख्या – 10

बुनकरी के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	कौन से बुनकर है?	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	आत्मनिर्भर बुनकर	25	21.00
2.	मास्टर बुनकर के अन्तर्गत कार्य करने वाले बुनकर	52	43.00
3.	सहकारी संस्था के अन्तर्गत कार्य करने वाले बुनकर	43	36.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 10 द्वारा प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि 43.00 प्रतिशत उत्तरदाता मास्टर बुनकर के अन्तर्गत कार्य करने वाले बुनकर है। 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता सहकारी संस्था के अन्तर्गत कार्य करने वाले बुनकर है जबिक केवल 21.00 प्रतिशत उत्तरदाता आत्मनिर्भर बुनकर की श्रेणी में है।

सारणी संख्या – 11

उत्तरदाताओं के प्रतिमाह कार्य दिवसों की संख्या के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	प्रतिमाह कार्य दिवसों की संख्या	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	10–15 दिन	46	38.00
2.	15–25 दिन	28	23.00
3.	25–35 दिन	26	22.00
4.	35 से अधिक	20	17.00
योग		**120.00**	**100**

उत्तरदाताओं के प्रतिमाह कार्य दिवसों की संख्या का आंकलन सारणी संख्या 11 में किया गया है जिसके आधार पर यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि 38.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को प्रतिमाह 10–15 दिन का ही काम मिल पाता है। 23.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें प्रतिमाह 15–25 दिन का कार्य मिल जाता है। 22.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि वह प्रतिमाह 25–35 दिन बुनकरी का काम करते है जबिक 17.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह कहा कि वह 35 से अधिक दिन कार्य करते है।

सारणी संख्या – 12

उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	औसत मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	5000 से कम	68	57.00
2.	5000–10000	52	43.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 12 के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 57.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की औसत मासिक 5000 रु0 से कम है जबकि 43.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके परिवार की औसतन मासिक आय 5000–10000 रु0 है।

सारणी संख्या – 13

उत्तरदाताओं के आय से प्रतिमाह बचत के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	आय से प्रतिमाह बचत	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	1000 से कम	28	23.00
2.	1000–2000	23	19.00
3.	2000–3000	19	16.00
4.	3000 से अधिक	17	14.00
5.	नहीं करते	33	27.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 13 में प्रतिमाह उत्तरदाताओं की आय में बचत का अध्ययन किया गया है जिसके अनुसार 27.00 उत्तरदाताओं का कथन है कि उनकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है जिससे वह प्रतिमाह अपनी आमदनी से बचत कर सकें। 23.00 उत्तरदाताओं ने बताया कि वह प्रतिमाह 1000 रु0 से कम धनराशि की बचत कर लेते है। 19.00 उत्तरदाता 1000 रु0 से 2000 रु0 की बचत कर लेते है। 16.00 उत्तरदाता का मानना है कि वह औसतन 2000 रु0 से 3000 रु0 तक की बचत प्रतिमाह कर पाते है जबकि 14.00 उत्तरदाताओं ने बताया कि वह प्रतिमाह 3000 रु0 अथवा उससे अधिक धनराशि अपने परिवार के भविष्य के लिए बचा लेते है।

सारणी संख्या – 14

उत्तरदाताओं के ऋण/कर्ज की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	ऋण/कर्ज की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिषत (%)
1.	हां	98	82.00
2.	नहीं	22	18.00
योग		**120.00**	**100**

सारणी संख्या 14 के प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि 82.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होनें किसी न किसी कारण वश ऋण/कर्ज लिया है जबिक 18.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि उन्होने किसी प्रकार का कर्ज नहीं लिया।

सुझाव

- हथकरघा उद्योग में अधिकांश बुनकर गरीब एवं ग्रामीण समुदाय के है, इसलिए शोधार्थी का सुझाव है कि भारत सरकार को हथकरघा आरक्षण अधिनियम 1985 को सख्ती से लागू करना चाहिए।
- हथकरधा बुनकरों को बीमा सुविधा प्रदान करना।
- हथकरघा क्षेत्र में अधिकांश बुनकर गरीब व अशिक्षित है। इसलिए सरकार द्वारा उचित प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- बुनकरों के हित को ध्यान रखते हुए अधिक से अधिक बुनकर केन्द्र स्थापित किये जाने चाहिए। सरकार को बुनकर सहकारी समीतियों को पुनर्गठित करना आवश्यक होगा।
- सरकार को हथकरघा क्षेत्र के लिए व्यवसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा पर एक व्यापक कानून बनाने की आवश्यकता है।
- बुनकरों को हथकरघा उद्योग को छोड़कर अन्य पेशों मे जाने से बचाने के लिए सरकार को अधिक से अधिक सब्सिडी प्रदान करना चाहिए।
- सरकार का बुनकरों को जेकक्वार्ड मशीने प्रदान करनी चाहिए ताकि बुनकर नये डिजाइनों की बुनाई कर सके। जिससे उन्हे अधिक पैसा प्राप्त हो सके। केवल इसी से सतत विकास सम्भव हो सकता है।
- सरकार को हथकरघा उत्पादों के विपणन की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।
- सरकार को सीधे हथकरघा बुनकरो को कच्चा माल उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में हथकरघा उद्योग धीर–धीरे पतन की ओर बढ़ रहा है और हथकरघा बुनकर गंभीर आजीविका के कारण गम्भीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसके पीछे मुख्य कारण सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रम, वैश्वीकरण, पावरलूम एवं मिल क्षेत्रों से प्रतिस्पर्द्धा, योजनाओं का अप्रभावी कार्यन्वयन और सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों में बदलाव है।

उपरोक्त सुझावों पर यदि ध्यान दिया जाए तो हथकरघा बुनकरों समस्याओं को काफी हद तक वाराणसी जिसे में हल किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. Balasubhramanyam, Nasina and M. Muthameenakshi (2018), " Socio-economic condition of handloom weavers in Andhra Pradesh : A Study of Nellore district," International journal of mechanical engineering and technology, Vol-9, Issue-, Pp 189-197
2. Raja, G.Naga and K. Vijyana Rao (2014), "A study of the socio-economic condition of handloom weavers," Journal of rural development, vol. 33 No (3), Pp. 309-328
3. Tanushree , Sha (2015), "A study of present situation of the tradional handloom weavers of Varanasi, U.P., India, International research journal of social sciences, vol- 4(3), 48-53

4. Dodmani, Dr. Srivnivasan (2015), "A socio-economic condition of handloom weaving in Yadgir district of Karnataka , global journal of research analysis, vol – 4, Issue-5, May 2015
5. Srinivas, Ankam and Nipmala Rajesh (2016), "Socio-economic condition of handloom weavers in Telangana state – A study of Warangal District", Asian Journal of management, engineering & computer science, vol 1 (2), 74-85
6. Sadanandam, Dr. B. (2016), " Socio-economic condition of handloom weavers societies - A case study of Warangal district", International Journal of management & social science, vol- 4, 328-334
7. Rao, Dr. Srinivas and Dr. M. Sridhar (2017), "Socio-economic condition of handloom weavers in Gonnavaram mandal of Krishna District in Andhra Pradesh," ," International Journal of Humanities & Social science, Vol - 22, Issue -9 , version II (Sep 2017) Pp- 42-49